

7. पश्चिम बंगाल में संथाल महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और चुनौतियाँ का अध्ययन

उमेश शर्मा

पीएच. डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज)

देवेश कुमार दूबे

पीएच. डी. शोधार्थी

जनसंचार विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

Email:- umeshfromkolkata@gmail.com

सारांश

शिक्षा किसी भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दुनिया भर में एक सार्वभौमिक मानव अधिकार बन गया है। जनजातीय महिलाएं अभी भी कई मामलों में पिछड़ी हुई हैं और उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जनजातीय महिलाओं के सांस्कृतिक मानदंडों और जीवन जीने के तरीका में बदलाव लाने तथा उनके दृष्टिकोण को बदलने और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान अध्ययन में पश्चिम बंगाल की संथाल महिलाओं के शिक्षा एवं आवश्यकता पर बल दिया गया है। पश्चिम बंगाल की समग्र साक्षरता तस्वीर वर्ष 2011 में भी संतोषजनक नहीं है। साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से 3.04 प्रतिशत अधिक है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पश्चिम बंगाल की संथाल जनजातीय महिलाओं की साक्षरता और शैक्षिक स्थिति का पता लगाना है। यह अध्ययन द्वितीय डेटा पर आधारित है। आंकड़े बताते हैं कि पश्चिम बंगाल में महिला शिक्षा की उभरती तस्वीर अभी ठंडे बस्ते में है। महिला शिक्षा का यह खराब परिदृश्य अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र में ध्यान देने योग्य है। वहां महिलाओं को शिक्षा हासिल करने के लिए कई सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। महिला शिक्षा या स्कूल छोड़ने में गंभीर बाधाओं में बाल-विवाह, सामाजिक लिंग रूढ़िवादी परिप्रेक्ष्य पितृसत्तात्मक सामाजिक संस्कृति तथा स्कूल का माहौल आदि शामिल हैं। लड़कियों को अपनी शिक्षा पूरी करने में सक्षम बनाना समाज की भविष्य की प्रगति में निवेश करना है। संथाली समाज में महिलाओं को निर्वाचित पदों पर रहने और भाग लेने पर प्रतिबंध है। ग्राम स्तर पर सार्वजनिक बैठकें या न्यायिक अदालती कार्यवाही सामाजिक रूप से संथाली महिलाओं को खुले तौर पर संथाल देवताओं और आत्माओं की पूजा करने धार्मिक बलिदानों में भाग लेने और बलि किए गए मुर्गों को खाने से प्रतिबंधित किया जाता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संथाली महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के सामाजिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक आयामों का पता लगाना है। यह अध्ययन

संथाल महिलाओं को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने से संबंधित सभी प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। तथा पश्चिम बंगाल में महिला शिक्षा की उभरती तस्वीर को दर्शाने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द: संथाल जनजाति, शिक्षा, सशक्तिकरण, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, भाषा।

प्रस्तावना

सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा वह तरीका जिसके द्वारा प्रत्येक नवजात मानव शिशु को एक विशिष्ट मानव समाज के पूर्ण सदस्य में बदल दिया जाता है। शैक्षिक पिछड़ापन एक विशिष्ट लिंग आयाम है। भारतीय समाज में जाति और नस्ल की संस्थाओं के आधार पर उच्च स्तर की संरचनात्मक असमानताएं हैं। भारत में जनजातीय आबादी संख्यात्मक रूप से देश की कुल आबादी का एक छोटा-सा हिस्सा है। देश की आबादी का लगभग 8.6% और राज्य की आबादी का 5.50% क्रमशः भारत और पश्चिम बंगाल में जनजातीय और स्वदेशी लोगों से बना है। अनुसूचित जनजातियाँ जिन्हें 'जनजातीय' भी कहा जाता है। भारत में जनजातीय लोग विशेषकर जनजातीय महिलाएं इस समाज के सबसे कमजोर और वंचित वर्गों में से एक हैं। 'अनुसूचित जनजाति' शब्द पहली बार भारत के संविधान में वंचित और पिछड़े माने जाने वाले लोगों के एक समूह को कुछ संवैधानिक विशेषाधिकार और सुरक्षा प्रदान करने के लिए सामने आया। आजादी के बाद से हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। देश की अनुसूचित जनजातियों और विभिन्न योजना अवधियों में जनजातीय विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत के संविधान अनुच्छेद 366 (25) अनुसूचित जनजातियों को 'ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों या ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के हिस्से या समूहों के रूप में परिभाषित करता है, जिन्हें अनुच्छेद 342 के तहत इस उद्देश्य के लिए अनुसूचित जनजातियों (एसटी) के रूप में समझा जाता है'। (महाजन, 2012)। अनुसूचित जनजातियों के हितों की रक्षा और उन्हें सामाजिक अन्याय और शोषण से बचाने के लिए अनुच्छेद 46, 275, 330, 332, 335, 338, 340 आदि में विशेष प्रावधान किए गए हैं। (बास्के, 2011)। भारत में 574 जनजातीय समूह हैं जिन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में पहचाना गया है। केंद्र सरकार और पश्चिम बंगाल राज्य सरकार ने शैक्षिक बाधाओं को दूर करने और जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के उत्थान के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण नीतियां और कार्यक्रम पेश किए हैं, उदाहरण के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम, सर्वशिक्षा अभियान, एसएसए के तहत प्राथमिक विद्यालयों का उन्नयन, नए आवासीय बालिका उच्च विद्यालय/ शैक्षिक कॉम्प्लेक्स, जनजातीय भाषा में शिक्षण, एसटी लड़कियों की साइकिलें, विभिन्न प्रोत्साहन आदि (बास्के, 2011)। इन सभी प्रयासों के बावजूद, जनजातीय महिलाएं सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में पिछड़ रही हैं।

भारत में उदारीकरण के बाद की अवधि (1991 के बाद) निस्संदेह महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था, समाज और भारतीय लोगों के जीवन के तरीके में काफी बदलाव आया है। वर्तमान में भारत उपभोग, व्यापार और वैश्विक राजनीति के क्षेत्र में एक उभरता हुआ देश है। उदारीकरण नीति से शिक्षा का क्षेत्र भी पर्याप्त रूप से प्रभावित हुआ है। इसका प्रभाव कितना सकारात्मक या नकारात्मक है, यह विवाद का विषय है। देश में 74.04% लोग साक्षर कहे जाते हैं

(2011 की जनगणना) और पश्चिम बंगाल के लिए यह 77.08% है। पश्चिम बंगाल में साक्षरता दर और इसकी वृद्धि पिछले काफी समय से राष्ट्रीय औसत के काफी करीब है। विशेष रूप से समाज के सबसे वंचित वर्गों के लिए प्राथमिक शिक्षा। इस प्रकार उपरोक्त सभी अध्ययन से यह पता चला है कि जनजातीय देश में सबसे वंचित वर्ग है और इनमें महिलाएँ अधिक उपेक्षित हैं। यह पाया गया है कि भारत में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर कई अध्ययन किए गए हैं। (चट्टोपाध्याय, 2014)

भारत में अनुसूचित जनजातियों के विभिन्न संप्रदाय समाज में हाशिए पर स्थित समूहों के रूप में पाए गए हैं। अशिक्षा उनके लिए अभिशाप है और उनके दुख का कारण है। शिक्षित महिलाओं वाला समुदाय अच्छी संस्कृति, प्रथा और मान्यताओं को अपनाकर और भावी पीढ़ी को शिक्षा में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित और शामिल करके जीवन के दुखों से अपनी मुक्ति सुनिश्चित कर सकता है। यदि महिलाएँ साक्षर और शिक्षित हैं, तो यह अपेक्षा की जाती है कि वे माँ की भूमिका निभाते हुए अपने बच्चे को शिक्षा में शामिल करने के लिए उत्साहित होंगी। भारत में अधिकांश महिलाएँ काम करती हैं और किसी न किसी रूप में अर्थव्यवस्था में योगदान देती हैं, लेकिन उनके अधिकांश काम का आधिकारिक आंकड़ों में दस्तावेजीकरण या हिसाब-किताब नहीं किया जाता है। महिलाएँ खेतों में काम करते समय खेतों में हल चलाती हैं और फसल काटती हैं। महिलाएँ काम करते समय बुनाई करती हैं और हस्तशिल्प बनाती हैं। महिलाएँ परंपरागत रूप से दैनिक घरेलू कामों के लिए जिम्मेदार हैं (हेन्रम, 2023)। संथाली महिलाओं के सामने आने वाले सांस्कृतिक प्रतिबंधों में बदलाव आ रहा है, फिर भी महिलाएँ औपचारिक अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए पुरुषों की तरह स्वतंत्र नहीं हैं। अतीत में सांस्कृतिक प्रतिबंध महिला रोजगार में प्राथमिक बाधाएँ हैं। संथाल समुदाय के लिए महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अपने परिवार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आर्थिक सशक्तिकरण निरंतर संघर्ष और प्रतिरोध के माध्यम से मानव निर्मित बंधन से मुक्ति की एक प्रक्रिया है। यह एक ऐसे सामाजिक वातावरण के लिए हाशिए पर रहने वाले समूहों की आशाओं और सपनों को साकार करने का भी प्रतिनिधित्व करता है। जो उन असमानताओं से मुक्त है जो उन्हें राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावित करते हैं। आर्थिक सशक्तिकरण का मुद्दा समानता स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे पहलुओं से भी जुड़ा हुआ है। आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को खुद पर निर्भर रहने और विशेष रूप से भूमि और अन्य संपत्तियों पर अपने कानूनी अधिकारों का दावा करने में मदद करता है (बेसरा, 2021)। संथाल समुदाय में महिलाएँ खेतिहर मजदूर, दैनिक मजदूर, दाई, हस्तशिल्प कार्य आदि के लिए जाती हैं। इस कारण से वे खराब गुणवत्ता वाले जीवन से संबंधित हैं क्योंकि उनके पास उन कार्यों से पर्याप्त पैसा नहीं है और अक्सर खाद्य असुरक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच की कमी की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और घरेलू हिंसा और बलात्कार का शिकार होते हैं। शिक्षा सशक्तिकरण का मुख्य द्वार है। यह महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है। संथालों में साक्षरता का स्तर अन्य समुदाय की तुलना में बहुत कम है। शिक्षा के अभाव में अधिकांश संथाल महिलाएँ अपने घरों से बाहर काम करती हैं और विभिन्न गतिविधियों में लगी रहती हैं। यहां तक कि छोटे बच्चे और लड़कियां भी अपनी मां के साथ काम पर जाते हैं।

अधिकांश समय वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते या स्कूल छोड़ देते हैं। यहां तक कि बहुत गरीब परिवारों में माता-पिता भी हमेशा बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते।(हेब्रम, 2023)

पश्चिम बंगाल में जनजातीय बहुल क्षेत्रों में जनजातीय जीवनशैली विभिन्न सामाजिक-आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं का संकेत देती है। सिंचाई, बिजली की कमी, क्षेत्र में उद्योगों की कमी, विकास कार्यों के लिए ग्रामीणों के बीच अलग-अलग राजनीतिक संगठनों के उद्भव के कारण रुचि और एकजुटता की कमी और कुछ अन्य समान बाधाएं सरकार की पहुंच से परे हो सकती हैं और दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता है उन पर काबू पाने के लिए पश्चिम बंगाल के ग्रामीण इलाकों में शैक्षिक पिछड़ापन एक बाधा थी। सभी दीर्घकालिक योजनाएँ जनजातीय समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में विफल रहीं। पूर्वी भारत और बांग्लादेश में सबसे प्रमुख जनजातीय समूह, संथाल, एक निश्चित व्यवसाय का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं। शिकार करना, मछली पकड़ना और जंगली पौधे, फल, शहद, कंद, फूल आदि का संग्रह करना प्राचीन काल से उनका व्यवसाय था। प्राचीन काल में संथाल अर्ध-खानाबदोश जीवन जीते थे, भोजन की तलाश में हमेशा घूमते रहते थे। अब संथालों का जीवन कृषकों जैसा है और वे एक व्यवस्थित ग्रामीण जीवन जीते हैं।(फ़राबी, 2023)

सामाजिक जीवन संस्कार-कर्मकाण्ड, चिन्तन एवं दर्शन मूलतः विभिन्न कृषि क्रियाओं पर केन्द्रित थे। संथाल किसी भी खेती के लिए जाहेरथान (संथालों का धार्मिक स्थान) पर अलग-अलग बोंगा में बलि संस्कार करते हैं। विभिन्न कार्यों जैसे कृषि कार्य, लकड़ी का काम, सड़क-निर्माण कार्य, हवेली की सहायता आदि में दैनिक श्रम भी उनका व्यवसाय और उनकी आय का स्रोत था। चूंकि महिलाएं आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं, इसलिए आधुनिक समाज महिलाओं के विकास पर काफी जोर देते हैं(हेम्ब्रम,2016)। संथाल समुदाय की महिलाओं को आज भी कई खतरों का सामना करना पड़ता है। दैनिक जीवन में और वे जीवन के सभी क्षेत्रों में मानवाधिकारों का आनंद लेने से वंचित हैं, जिससे उन्हें हाशिए पर धकेल दिया जाता है और शिक्षा ही मुख्य साधन है जो संथाली महिलाओं की स्थिति में सुधार कर सकती है। संथाल समुदाय की समस्याएँ और अभाव तथा इसके विरुद्ध विद्रोह का इतिहास बहुत पुराना है। स्थायी बंदोबस्त अधिनियम, 1793 के लागू होने के कारण जंगल महल में संथालों की समस्या और भी गंभीर हो गई है। संथालों ने कृषि प्रयोजन के लिए जंगलों को साफ कर दिया, लेकिन उन्हें भूमि का स्वामित्व नहीं मिला और उनकी पारंपरिक मंडली प्रणाली का पतन हो गया। जमींदारों, साहूकारों और निश्चित रूप से औपनिवेशिक शासकों द्वारा उन पर अत्याचार किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 1855 का संथाल विद्रोह हुआ।(दास, जुलाई-2017)

शोध उद्देश्य

1. पश्चिम बंगाल में संथाल जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का पता लगाना।
2. संथाल जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ी समस्याओं का पता करना।

शोध प्रविधि

यह एक सैद्धांतिक शोध पत्र है, जो द्वितीयक डेटा पर आधारित है। विभिन्न लेखकों और शोधकर्ताओं द्वारा तैयार की गई द्वितीयक जानकारी का उपयोग किया गया है। प्रासंगिक डेटा अकादमिक पुस्तकों, विभिन्न विद्वानों के शोध पत्रों, भारत की जनगणना से एकत्र किया गया है।

संथाल जनजाति का सामाजिक जीवन:

संथाल जनजाति की लगभग 97 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। इस जनजाति के परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय तथा पितृस्थानीय है। पैतृक संपत्ति पर पहला अधिकार पुत्रों का, फिर अविवाहित पुत्रियों का तब पट्टीदारों का होता है। इनके बीच एकाकी तथा संयुक्त दोनों प्रकार के परिवार देखने को मिलते हैं। पिता ही परिवार का मुख्य होता है। संथाल महिलाओं की दैनिक चर्याओं में नारी स्वंत्रता की झलक दृष्टिगोचर होती है। संथाल महिलाएँ सरल तथा काफी परिश्रमी होती हैं। बच्चों का लालन-पालन, खाना बनाने, पानी लाने, कृषि तथा अन्य व्यवसायी कार्यों के संपादन में संथाल महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है। हाटों में वस्तुयें बेचने तथा आवश्यक चीजों की खरीददारी करने में संथाल महिलाएँ काफी प्रवीण होती हैं। किन्तु संथाल महिलाएँ शिकार, पूजा-अर्चना तथा पंचायत की बैठक में हिस्सा नहीं ले सकती हैं (चक्रवर्ती, डी. & मंडल, डी.)। इसी तरह संथाल महिलाओं द्वारा हल जोतने, छप्पर छाने इत्यादि जैसे कार्यों पर पाबंदी होती है। कन्या जब तक अविवाहित होती है, अपने पिता की संपत्ति मानी जाती है तथा विवाह के समय उसे प्राप्त करने के लिए पोन (वधू मूल्य) चुकाना पड़ता है। विवाह के बाद वह अपने पति की संपत्ति मानी जाती है। संथाल महिलाएँ अपने परिवार में सलाहकार के रूप में प्रायः स्वीकार की जाती हैं। परित्यक्ता तथा विधवा महिलाओं का स्थान समाज में अपेक्षाकृत निम्न माना जाता है। बुजुर्ग महिलाओं तथा पुरुषों को समाज में आदर प्रदान किया जाता है (हेम्ब्रम, 2016)।

संथाल एक अच्छी तरह से परिभाषित पारंपरिक न्यायिक स्वशासी प्रणाली को सख्ती से बनाए रखते रहे हैं। वास्तव में ये महिला अधिकारी संथाल जीवन चक्र के विभिन्न अवसरों के साथ-साथ विभिन्न त्योहारों में मनाए जाने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और जनजातियों की पारंपरिक शासन प्रणाली में उनका कोई लेना-देना नहीं है। महिलाओं को धार्मिक कार्यों में बलि देने और कोई भी कार्य करने की अनुमति नहीं है। महिलाएँ भी इस धारणा को स्वीकार करती हैं (कुमार 2014)। चूंकि मांझी उनकी पारंपरिक स्वशासी व्यवस्था के सर्वोच्च हैं और यह स्वशासी व्यवस्था धर्म और आस्था से जुड़ी हुई है, इसलिए पूरे समुदाय की मांझी पद पर आस्था है। आमतौर पर महिलाओं को मांझी के पद पर स्वीकार नहीं किया जाता है। महिला मांझी को स्वीकार करने से असुविधा हो सकती है क्योंकि विशेषकर संथाल महिलाएँ गाँवों में पारंपरिक शासन प्रणाली की आदी हैं और सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था के खिलाफ कुछ भी आवाज उठाने की हिम्मत नहीं करती हैं। संथालों में आज भी जादू-टोने की आस्था और प्रथा बहुत मजबूत है। उनकी मान्यता के अनुसार अधिकांश भयानक जादुई प्रभाव और लाईलाज बीमारियाँ जादू-टोने की प्रथाओं के परिणामस्वरूप मानी जाती हैं। संथाल हमेशा जादू-टोने के भय से ग्रस्त रहे हैं। उनका मानना है कि जादू-

टोना समाज को अस्थिर कर सकता है, माना जाता है कि संथालों में केवल महिलाएं ही जादू-टोना करती हैं, जबकि मुंडा, ओरांव, भील और अन्य जनजातियां जादू-टोना करती हैं, जिनमें पुरुष या महिला दोनों ही जादू-टोना कर सकते हैं। संथालों में यह गहरी मान्यता है कि जादू-टोना एक महिला को सशक्त बनाता है। किसी समाज में हानि पहुंचाना। किसी भी उम्र की महिला जादू-टोने की जादुई शक्ति हासिल कर सकती है। उनका मानना है कि चुड़ैलें लड़कियों को अपनी शिष्या बनने के लिए मजबूर करती हैं ताकि उनकी मौत के बाद भी यह विरासत जारी रहे। ऐसा कहा जाता है कि उनका प्रशिक्षण बहुत अंधेरी रातों में जंगल या खुले मैदान में किया जाता है। इसमें मंत्र आकर्षण और गीतों की शिक्षा शामिल होती है(मांझी, 2022)।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंचने में संथाली जनजातीय बच्चों की चुनौतियाँ:

संथाली महिलाओं के काम में दैनिक श्रम, कृषि कार्य शामिल हैं। यहां तक कि छोटे बच्चे और लड़कियां भी अपनी मां के साथ काम पर जाती हैं। अधिकांश समय वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जाती या स्कूल छोड़ देती हैं। यहां तक कि बहुत गरीब परिवारों में माता-पिता भी बच्चों को हमेशा स्कूल नहीं भेजना चाहते क्योंकि तब काम में मदद करना कम हो जाएगा। अधिकांश जनजातीय समूहों में पितृसत्ता का प्रभाव दृढ़ता से देखा जा सकता है और इसलिए महिलाओं को अपने काम से जो भी पैसा मिलता है वह अपने पति को दे देती है और पति अक्सर उस पैसे को शराब पीने जैसी गतिविधियों पर खर्च कर देता है। घरेलू कार्य परिवार की महिला सदस्यों द्वारा किया जाता है। घरेलू काम में खाना बनाना, सफाई करना, बर्तन और कपड़े धोना, खाना पकाने के लिए ईंधन इकट्ठा करना शामिल है। जो युवा लड़कियाँ स्कूलों में प्राथमिक स्तर पर पढ़ रही हैं वे स्कूल में शायद ही कुछ सीख पाती हैं और वे घर पर भी नहीं पढ़ती हैं। संथाली जनजातीय बच्चों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है(अहमद, निजामुद्दीन और तत्त्वसरानंद, स्वामी जुलाई 2018)। शिक्षा तक पहुंच में सुधार लाने के उद्देश्य से कई सरकारी पहलों के बावजूद, कई संथाली बच्चे अभी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण उनके स्कूलों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे और संसाधनों की कमी है। कई संथाली स्कूल दूरदराज के इलाकों में स्थित हैं, जहां बिजली, साफ पानी या बुनियादी सुविधाएं बहुत कम या बिल्कुल नहीं हैं। इससे शिक्षकों के लिए विद्यार्थियों को अनुकूल शिक्षण वातावरण प्रदान करना कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त संथाली बच्चों के लिए भाषा बाधा एक और बड़ी चुनौती है। भारत में अधिकांश स्कूल हिंदी या अंग्रेजी में पढ़ाते हैं, जिसे कई संथाली बच्चे नहीं समझते हैं। इससे उनके लिए पाठों का पालन करना और अपने सहपाठियों के साथ बने रहना मुश्किल हो सकता है। इसके अलावा, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं भी हैं जो संथाली बच्चों को स्कूल जाने से रोकती हैं। कई संथाल परिवार अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़े हुए हैं और अपने बच्चों, विशेषकर लड़कियों को स्कूल भेजने में अनिच्छुक हैं। संथाल जनजातीय लड़कियों की शिक्षा में भागीदारी न होने का मुख्य कारण गरीबी और भूख है। यद्यपि भारतीय संविधान मुफ्त सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा को सुरक्षित करता है, लेकिन इसमें अक्सर वर्दी, पाठ्य पुस्तकें, स्कूल की यात्रा, भोजन और अन्य संबंधित खर्च शामिल नहीं होते हैं जो अधिकांश जनजातीय परिवारों के लिए बोझ बन जाते हैं और लड़कियों को उच्च शिक्षा के लिए

नामांकित करना उनके लिए विलासिता बन जाता है(गुइन, 2023)। माता-पिता का उदासीन रवैया और साथ ही जनजातीय लड़कियों की शिक्षा के प्रति एक और बाधा है। अधिकांश जनजातीय माता-पिता शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ हैं और वे अपने बच्चों को पारिवारिक आय बढ़ाने या अपने भाई-बहनों की देखभाल करने, मवेशी पालने, घर के कामों में माँ की मदद करने, वन उत्पाद जैसे सूखे पत्ते, बीज संग्रह करने के लिए पारिश्रमिक रोजगार में संलग्न करना पसंद करते हैं। समुदाय में बाल विवाह और बाल श्रम भी प्रचलित है, जो बच्चों को स्कूल जाने से रोकता है। सरकार ने 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की घोषणा की है, जो आजकल माता-पिता को इस आशा के साथ अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करती है कि यदि उनके बच्चों को उचित शिक्षा मिलेगी, तो उनकी स्थिति में सुधार होगा। बच्चों को निःशुल्क स्कूल यूनिफार्म दी जाती है। किताबें और मध्याह्न भोजन। हालाँकि, लड़कियाँ लगातार स्कूल जारी नहीं रखती हैं। कभी-कभी वे स्कूल जाते हैं, कभी-कभी वे स्कूल नहीं जाते हैं और घर पर रहते हैं और अपनी माँ के साथ काम पर जाते हैं और घरेलू काम में अपनी माँ की मदद करते हैं। परिणामस्वरूप वे स्कूल में सीखी हुई बातें भूल जाते हैं। लड़कियों के किशोर होने के बाद माता-पिता उन्हें स्कूल भेजना बंद कर देते हैं(कल्शा, 2013)।

संथाली महिलाओं का सशक्तिकरण एवं शिक्षा:

संथाली महिलाएं कृषि मजदूर दैनिक मजदूर हस्तशिल्प कार्यकर्ता आदि के रूप में काम करने के लिए घर से बाहर जाती हैं। इस कारण वे आय के रूप में पर्याप्त धन न होने के कारण निम्न गुणवत्ता वाला जीवन व्यतीत करते थे। स्वाभाविक रूप से उन्हें खाद्य असुरक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। घरेलू हिंसा और बलात्कार का शिकार होना उनके जीवन के लिए एक और खतरा है। संथाल महिलाएं बहुत ही शांतिप्रिय और दयालु स्वभाव की होती हैं और सहयोगात्मक स्वभाव की होती हैं। इन्हें झगड़ने और बदनामी से नफरत है लेकिन ये समाज द्वारा निर्धारित अपनी जिम्मेदारियों के साथ आत्मनिर्भर रहना पसंद करते हैं। वे स्वभाव से बहुत आत्मनिर्भर और स्वावलंबी होते हैं और हमेशा अपने मन के स्वामी बने रहना पसंद करते हैं। यद्यपि संथाल महिलाओं को परिवार में पूरे वर्ष मेहनती माना जाता है, लेकिन उनके आर्थिक मूल्य का सही आकलन नहीं किया जाता है(पाल, 2016)। 80% से अधिक कृषि कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है फिर भी वे उपज की मालिक नहीं हैं। वे उपज को सिर पर रखकर बाजार तक ले जाते हैं, लेकिन केवल इच्छानुसार परिवार का मुखिया संथालों में दहेज प्रथा नहीं है, लेकिन साथ ही तलाक बहुत होता है। महिलाओं को बहुत प्रताड़ित किया जाता है। एक संथाल पुरुष के पास अपनी ओर से कुछ विशिष्ट पारंपरिक संस्कार और उत्सव होते हैं। लेकिन एक महिला को ऐसे विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हैं। जादू-टोना की प्रथा में केवल महिलाओं को ही डायन के रूप में पहचाना जाता है और कई मामलों में ऐसी पहचानी गई महिलाओं को बेरहमी से मार दिया जाता है। "बचपन में एक लड़की को खुलकर खेलने का मौका बहुत कम मिलता है क्योंकि वह अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने या अपनी माँ की मदद करने में व्यस्त रहती है। किशोरावस्था में लड़की की गतिविधियों पर बहुत अधिक प्रतिबंध होता है। वह कहीं भी अकेले नहीं जा सकती। एक

लड़की 12 साल तक अविवाहित रहना कुछ गलत लगता है। लड़के की तुलना में लड़की का पुनर्विवाह अधिक कठिन होता है, विशेषकर उस लड़की का जिसे कोई समस्या हो या लड़की हो। एक अलग महिला का विवाह सर्वोत्तम तरीके से नहीं हो सकता या वह किसी कुंवारे व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती, जबकि एक संथाल पुरुष कई बार ऐसा कर सकता है। संथालों के बीच शिक्षा: अधिकांश संथाल अशिक्षित और अकुशल भूमिहीन मजदूर हैं जो बहुत कम मजदूरी पाते हैं जो परिवार चलाने के लिए पर्याप्त नहीं है। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम बंगाल की कुल जनसंख्या 9,13,47,736 है, जिसमें 52,96,953 (कुल जनसंख्या का 5.79%) जनजातीय लोग हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, जनजातियों के बीच साक्षरता दर (58.96%) देश की समग्र साक्षरता (74.04%) से काफी कम पाई गई है, 2011 की जनगणना के अनुसार, पश्चिम बंगाल में 45.37% संथाल साक्षर थे। संथाल लोग बांग्ला के साथ-साथ अपनी भाषा संथाली भी बोलते हैं। उनके पास अल चिकी के रूप में लिपि है। 2003 में भारत के संविधान द्वारा संथाली को भारतीय भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई थी। वर्तमान में संथाली को भारत के जनजातीय क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में पेश किया गया है। संथालों को अपनी भाषा को भारतीय संविधान द्वारा मान्यता दिलाने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जनजातीय दुनिया में, विशेषकर जनजातीय महिलाओं के बीच, आजीविका के दैनिक साधनों को बनाए रखने के अत्यधिक दबाव के कारण शिक्षा को हमेशा कम चिंता का विषय माना गया है। इसके संबंध में, कलशा, डब्ल्यू.जे. (2013) ने जनजातीय महिला शिक्षा की संकटपूर्ण स्थिति की पुष्टि की और लिखा - "जनजातीय समुदाय के बीच जनजातीय लड़कियाँ सबसे अधिक उपेक्षित समूह हैं, और उनके शिक्षित होने की संभावना सबसे कम है"। इसके अलावा, जादू-टोना जैसे कुछ अंधविश्वासों और बीमार सांस्कृतिक मान्यताओं पर अत्यधिक निर्भरता ने जनजातीय महिलाओं की समग्र स्थिति को और खराब कर दिया है और संथाल भी इसके अपवाद नहीं हैं। इस संदर्भ में गुइन, कुमार. राजीब, (2023) ने लिखा, "गरीबी और शिक्षा की कमी का आपस में गहरा संबंध है, जनजातीय समुदायों का सामाजिक और भौगोलिक अलगाव उनके बीच शिक्षा की धीमी प्रगति के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक है"। संथाल जैसे जनजातीय समाज में, महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण है और 21वीं सदी के नए भारत के लिए अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है और इस संबंध में संथाली महिलाओं को उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए उचित शैक्षिक अवसर प्रदान करना अत्यधिक सराहनीय है।(साहू, 2014)

संथाली महिलाएँ - प्रमुख चुनौतियाँ:

संथाली महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं और यह पूरे संथाल समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार के सदस्यों की देखभाल और पोषण के मामले में महिलाएं अपने परिवार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा सशक्तिकरण का मुख्य द्वार है। यह महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है। शिक्षा की कमी के कारण अधिकांश संथाल महिलाएँ विभिन्न कम वेतन वाले कार्यों में संलग्न होने के लिए मजबूर होती हैं और शोषण का आसान लक्ष्य बन जाती हैं। संथाली महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रशिक्षण समेत विभिन्न कार्यक्रम चलाये

जा रहे हैं। संपर्क में शर्म, भाषा संबंधी बाधाएं, मनोवैज्ञानिक दूरी के साथ-साथ गैर-जनजातीय पृष्ठभूमि के लोगों से सांस्कृतिक दूरी इन जनजातीय महिला छात्रों के लिए जानकारी प्राप्त करने की राह में प्रमुख बाधाएं हैं। जनजाति की एक विशेषता यह है कि वे बाहरी दुनिया से संपर्क करने में शर्माते हैं। वे आम तौर पर अपने स्वयं के सूचना यहूदी बस्ती में रहते हैं, लेकिन जनजातीय और गैर-जनजातीय लोगों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान हमेशा न्यूनतम स्तर पर होता है (खंडा, 2018)। हम जनसंख्या के लिंग पर विचार कर रहे हैं, तो यह महिला है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को सदैव आश्रित समझा जाता है। संथाल जनजाति कोई अपवाद नहीं है। वे विकट परिस्थितियों में भी जानकारी मांगने में हमेशा झिझकते हैं। उन्होंने इससे लड़ने का एक तरीका ढूंढ लिया है। वे आमतौर पर समूहों में रहते हैं। जब वे पुस्तकालय जाते हैं, तो प्रारंभ में वे समूहों में जाते हैं। उनकी गरीबी, पौष्टिक भोजन की कमी और कुपोषण के कारण संथालों में बाल मृत्यु दर का प्रतिशत उच्च है। ऐसे गरीब परिवारों में बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता है। माता-पिता पर्याप्त रूप से प्रेरित नहीं हैं या उनके पास अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए पर्याप्त आर्थिक साधन नहीं हैं। कई बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही पढ़ाई छोड़ देते हैं (पाण्डे, 2007)। स्कूल में उन्हें एक विदेशी भाषा से अवगत कराया जाता है जो उनकी मातृभाषा नहीं है और इसलिए उन्हें मुख्यधारा के गैर-जनजातीय समुदायों से आने वाले छात्रों और शिक्षकों के सामने हीन स्थिति में डाल दिया जाता है। सरकार गांवों में बच्चों और वयस्कों के लिए स्कूल चलाती है। कई स्कूल केवल कागजों में हैं और वास्तविकता में उनका अस्तित्व ही नहीं है और प्रेरित शिक्षकों की अनुपलब्धता भी संथालों के बीच शैक्षिक क्षेत्र में एक असामान्य शून्य पैदा करने वाली एक और बारहमासी समस्या है। आदिवासियों के प्रति सरकार का रवैया प्रकट पितृसत्तात्मकता और फैली हुई उदासीनता और यहां तक कि प्रशासन के कुछ वर्गों में घोर विरोध का एक अजीब मिश्रण है। जनजातीय शिक्षा के संबंध में सरकारी नीतियों में यह स्पष्ट है। शहरों में किसी गैर-जनजातीय द्वारा विदेशी भाषा में पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है और उसे जबरदस्ती भोले-भाले ग्रामीण जनजातीय बच्चों पर थोप दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप ये बच्चे विदेशी शिक्षा नहीं सीख पाते हैं, जो बचपन में ही अप्रिय होती है। इसलिए, ऐसा लगता है कि बहुत कम संख्या में संथाल छात्र इन बाधाओं से गुजर पाते हैं। इसके अलावा, जनजातीय क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों के पाठ्यक्रम में जीवंत जनजातीय तत्वों को शामिल किया जा सकता है। जैसा कि हसनैन (2001) का मानना है, “कृषि, नृत्य, शिकार, जनजातीय खेल और तीरंदाजी जैसी कुछ जनजातीय गतिविधियों को स्कूल की पाठ्येतर गतिविधियों में पूर्ण अभिव्यक्ति पाने की अनुमति दी जानी चाहिए, इस प्रकार पारंपरिक मूल्यों और संगठन के रूपों की कुछ निरंतरता प्रदान की जानी चाहिए” (अंकिता, 2020)।

संथालों की शिक्षा में प्रमुख चुनौतियाँ जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है वे इस प्रकार हैं:

स्कूल में भाषा की समस्या: शिक्षा का माध्यम, सहपाठियों की भाषा और किताबें और शिक्षक उनकी घरेलू भाषा से भिन्न होते हैं। इसलिए संथाल बच्चों को पाठ का पालन करने और कक्षा में भाग लेने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

वांछित विद्यालय वातावरण का अभाव: संथाल बच्चों को विद्यालय का वातावरण प्रतिकूल लगता है। वे स्कूल में उपेक्षित, प्रताड़ित और अपने को लोगों से अलग-थलग महसूस करते हैं। अधिकांश शिक्षकों और गैर-संथाल साथियों को प्राथमिक में इस व्यवहार में शामिल नहीं होना चाहिए।

स्कूल का समय: जनजातीय संदर्भ में, जनजातीय लड़कियों के लिए नियमित रूप से स्कूल जाने में स्कूल का समय भी एक बड़ी समस्या है। पश्चिम बंगाल में अधिकांश जनजातीय खेतिहर मजदूर हैं। वे सुबह जल्दी काम के लिए निकल जाते हैं और जनजातीय लड़कियों को उनके घरों की देखभाल करने और विभिन्न घरेलू गतिविधियों को करने की जिम्मेदारी उनके माता-पिता द्वारा दे दी जाती है, जिससे अनियमित उपस्थिति और उच्च स्कूल छोड़ने की डर होती है। घर से स्कूल की दूरी के कारण कभी-कभी बच्चों को कई मील तक पैदल चलना पड़ता है। उत्तरदाताओं ने इसे भी एक कारण बताया है, जिसके कारण संथाल बच्चे स्कूल नहीं जाना चाहते हैं।

राजनीतिक उदासीनता: एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या जनजातीय महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण के मुद्दे के प्रति राजनीतिक उदासीनता है। जनजातीय शिक्षा की देखभाल करने वाले विभिन्न सरकारी विभागों के बीच सहयोग और समन्वय की कमी। जनजातीय कल्याण विभाग और शिक्षा विभाग के कारण स्कूली शिक्षा में जनजातीय लड़कियों का नामांकन कम है।

सहायक घरेलू वातावरण का अभाव: अधिकांश माता-पिता इस बारे में जानकार या सूचित नहीं हैं कि वे अपने बच्चों को स्कूल के लिए तैयार होने में क्या मदद कर सकते हैं। स्कूलों का माता-पिता के साथ, विशेषकर जनजातीय समुदाय के लोगों के साथ, अधिक संवाद नहीं होता है।

बाल शिक्षा के बारे में माता-पिता की जागरूकता का अभाव: हेम्ब्रम (1982) ने पाया कि अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों की वृद्धि और विकास में मार्गदर्शन और मदद करने और इस उद्देश्य के लिए घर पर उचित वातावरण बनाने के बारे में अपनी भूमिका और जिम्मेदारी से अवगत नहीं हैं और अपने बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने के लिए भले ही कुछ माता-पिता को बच्चों की शिक्षा के बारे में थोड़ी भी समझ हो, लेकिन उनमें से अधिकांश औपचारिक शिक्षा या साक्षरता से भी वंचित हैं। वे अपने बच्चों के शिक्षा की देखभाल और पर्यवेक्षण ठीक से करने में सक्षम नहीं हैं।

गरीबी और भूख: संथाल जनजातीय लड़कियों की शिक्षा में भागीदारी न होने का मुख्य कारण गरीबी और भूख है। गरीबी शिक्षा में मुख्य बाधाओं में से एक है, जो स्कूल तक पहुंच और वहां बने रहने के रास्ते में बाधाएं पैदा करती है। गरीबी संथाल बच्चों की शिक्षा पर विभिन्न तरीकों से प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

कम उम्र में शादी: संथाल लड़कियों (किशोरियों) की कम उम्र में शादी उनकी स्कूल में पढ़ाई जारी रखने में एक और बाधा है।

शराब की लत: घर में शराब बनाना और नियमित रूप से पीना एक ऐसी लत है, जो परिवार में और माता-पिता की जिम्मेदारी के निर्वहन में प्रतिकूल माहौल पैदा करती है।

भाषा बाधा न केवल सूचना की सामग्री की भाषा के संबंध में बल्कि सूचना की आवश्यकता को व्यक्त करने की भाषा के संबंध में भी जानकारी की पहुंच में एक बहुत मजबूत बाधा है। संथाली छात्र, अपने अलगाव और अपने ही सजातीय समूह के भीतर रहने की प्राथमिकता के कारण, अपनी भाषा-संथाली में बातचीत करते थे। वे सभी मनुष्यों की तरह अपनी मातृभाषा में काफी सहज होते हैं। वे किसी भी अन्य भाषा की तुलना में अपनी जानकारी की आवश्यकता को उस भाषा में आसानी से व्यक्त कर सकते हैं। विभिन्न स्रोतों में जनजाति की दी गई परिभाषा के अनुसार, यह सामान्य बात है कि वे मनोवैज्ञानिक रूप से गैर-जनजातीय लोगों के साथ-साथ अन्य जनजातियों के लोगों से भी अलग-थलग हैं। इस अलगाव को भौगोलिक निवास स्थान, सांस्कृतिक अंतर, जीवनशैली आदि के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, वे अन्य गैर-जनजातीय पृष्ठभूमि के लोगों के सामने अपनी सूचना आवश्यकताओं को व्यक्त करने में मनोवैज्ञानिक बाधा महसूस करते हैं जो कॉलेज के साथ-साथ पुस्तकालय में भी प्रमुख हैं। बातचीत से विश्वास और व्यक्तिगत संबंध की भावना पैदा होती है जिसे सामाजिक नेटवर्क कहा जा सकता है जिससे सामाजिक पूंजी का निर्माण होता है। भाषा की बाधा छात्रों के लिए एक वास्तविक समस्या है। छात्रों को सहज बनाने के लिए, शिक्षकों को संथाली भाषा सीखनी चाहिए कम से कम यह समझना सीखें कि वह क्या बोलती है। इन प्रयासों के माध्यम से शिक्षकों को बहुसांस्कृतिक वर्ग की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए। यह देखा गया है कि इन संथाली छात्रों को मुख्य धारा के अध्ययन में लाना और उन्हें सामान्य आबादी के साथ घुलने-मिलने की अनुमति देना मुख्य हितधारक शिक्षकों के उपरोक्त निरंतर प्रयास से ठीक से पूरा हुआ है (चटर्जी, 2014)।

निष्कर्ष:

संथाल जनजाति की जीवन शैली को अनौपचारिक शिक्षा संस्थागत प्रक्रिया के रूप में परंपरागत तौर पर प्रभावित करती रही है। यद्यपि इनके बीच युवागृह जैसी संस्था का अभाव रहा है। युवक-युवतियों को सामाजिक कर्तव्य तथा दायित्व संबंधी प्रशिक्षण प्रदान कर सके। किन्तु परिवार, पड़ोस तथा गाँव की पृष्ठभूमि में संथाल बच्चों को साक्षरता-पूर्व काल के दौरान अनौपचारिक ढंग से प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया निरंतर अस्तित्व में बनी रही है। संथाल युवा तथा युवतियों के आचरण संबंधी नैतिक शिक्षा के लिए जोग मांझी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। ईसाई मिशनरियों के आगमन के पश्चात् गिरजाघरों की स्थापना के साथ ही इनके बीच औपचारिक शिक्षा का सूत्रपात हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी स्तर पर इनके बीच शिक्षा के फैलाव के लिए विद्यालय तथा महाविद्यालय खोले गये। तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा पॉलिटैक्निक संस्थाएं भी उपलब्ध करायी गयीं। दुमका स्थिति प्राक प्रशिक्षण केंद्र के अंतर्गत टंकण तथा आशुलिपि की परीक्षाओं के लिए झारखण्ड सरकार के कल्याण विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के तहत 15-35 आयु वर्ग के निरक्षरों को साक्षर बनाने तथा कार्यात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए वयस्क शिक्षा केंद्र खोले गये। समेकित बाल विकास सेवा योजना के अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों को विद्यालय पूरे अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जा रही है। फिर भी संथाल जनजाति के बीच शिक्षा प्रसार की गति धीमी है। संथाल जनजाति के बीच नारी तथा उच्च शिक्षा का भी समुचित प्रसार

नहीं हो पाया है, जिसके लिए सरकारी तथा सामाजिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है (दास, 2017)। संथाल महिलाएं आज भी अंधेरे के साये में हैं। ईसाई धर्म के प्रभाव और शिक्षा के प्रति जागरूकता ने संथाल महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें मुख्य रूप से शैक्षिक और चिकित्सा क्षेत्र में शिक्षकों और नर्सों के रूप में शामिल करने में बहुत योगदान दिया है, लेकिन उन्हें अपने जनजातीय समाज में एक सम्मानजनक स्थिति तक पहुंचने के लिए सशक्त बनाने के लिए अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रभाव के कारण संथाल समुदाय अपने स्वास्थ्य, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक रीति-रिवाजों और मान्यताओं के प्रति तेजी से बदल रहा है। संथाली महिलाओं की जीवनशैली उनके समुदाय में शिक्षा और प्रौद्योगिकी के प्रसार के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे बदल रही है। संथाली महिलाओं में कृषि की नई पद्धति, खाना पकाने की शैली और खान-पान की आदतें अपनाई जा रही हैं। उन्होंने अपने बच्चों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को समझना शुरू कर दिया है और आधुनिक स्वास्थ्य प्रथाओं से अवगत होना शुरू कर दिया है, पुजारियों और ओझाओं के जादू-टोने पर संदेह कर सकते हैं। संथाली महिलाएं अब विभिन्न अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ तार्किक व्यवहार दिखा रही हैं। संथाल महिलाओं को शामिल करना और उन्हें गरीबी उन्मूलन और सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव को कम करने के मुख्यधारा के प्रयासों के हर पहलू में हिस्सेदारी देना उतना ही आवश्यक है जितना कि वंचित संथाल बच्चों और युवाओं के लिए समग्र रूप से समाज के लिए। यह उस न्यायपूर्ण समाज के निर्माण का तरीका है, जिसकी एक राष्ट्र के रूप में भारत आकांक्षा करता है। सरकार, नागरिक समाज और सभी एजेंसियों को शिक्षा, कौशल विकास में आवश्यक नीति, उद्देश्यों, प्राथमिकताओं और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने और समर्थन करने और इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में भूमिका निभानी है। संथाल महिलाओं के लिए बेहतर भविष्य भारत में सभी बच्चों और युवाओं के लिए बेहतर जीवन के निर्माण का एक अभिन्न अंग है।

संदर्भ सूची

1. Farabi, Al Russell. (April-2023). Education and Empowerment of Santali Women in West Bengal. International Journal For Innovative Research In Multidisciplinary Field. ISSN (O): 2455-0620. Value: 86.87 Volume – 9.



2. Das, Sampa. (July -2017). Socio-Economic Growth Through Women Education: A Case Study On The Santal At Balipara Of Birbhum, West Bengal. International Research Journal of Engineering and Technology (IRJET) Volume: 04 Issue: 07. ISSN: 2395-0056.
3. Das, Sampa. (2017). Economic Growth and Women Empowerment through Education: A Study on Santal at Birbhum.
4. West Bengal. International Journal of Engineering Development and Research (www.ijedr.org) Volume 5, Issue 3 | ISSN: 2321-9939.
5. Das, Jyoti Nayan. (July 2015). Santali Women: Under the Shadow of Long Silence. International Journal of Humanities & Social Science Studies (IJHSSS) A Peer-Reviewed Bi-monthly Bi-lingual Research Journal ISSN: 2349-6959.
6. Chattopadhyay, Pradip. (2014). Redefining Tribal Identity: The Changing Identity Of The Santhals In South-West Bengal. Primus Books. ISBN : 978-93-80607-91-7.
7. Pal, Kumar Tapas. (2016). Tribal Economy Of West Bengal With Emphasis On Non-Farm Sector. New Delhi : Abhijeet Publication.
8. Culshaw, W. J. (2013). Tribal Heritage: A Study of The Santals. New Delhi: Gyan Publishing House.
9. Chakraborty, D. & Mondal, D. "Role of Education in Women Empowerment: A Case study on the Social Development.
10. of the 'Santal' of Birbhum District, West Bengal". *New Man International Journal of Multidisciplinary Studies*. Vol-1, Issue-12. PP-315, 2014.
11. Sahu, K. K. (2014). Challenging Issues of Tribal Education in India. *Journal of Economics and Finance*.
12. Khanda, Subhasish. (Febr 2018). Educational Status of Tribal Women in West Bengal. International Journal of Research Available at <https://edupediapublications.org/journals>. ISSN: 2348-6848.
13. Chatterjee, Soumendu. (October 2014). Status of educational performance of tribal students: a study in Paschim Medinipur District, West Bengal. <https://www.researchgate.net/publication/273459136>



14. Guin, Kumar. & Rajib. (2023). Status and challenges of tribal education in Jungle Mahal: a statistical analysis. *Library Philosophy and Practice (e-journal)*
15. Nizamuddin, Ahmed. & Swami, Tattwasarananda. (2018). Education Of Santals Of Jhargram: An Ethnographic Study. *IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS) Volume 23, (July. 2018) PP 51-58 e-ISSN: 2279-0837,*
16. पाण्डे, गया. (2007). भारतीय जनजातीय संस्कृति. नई दिल्ली : कनसैट पब्लिकेशन.
17. बास्के , धीरेन्द्रनाथ. (2011). पश्चिम बंगाल का आदिवासी समाज. कोलकाता : बसंती पब्लिकेशन.
18. हेंब्रम, परिमल. (2023). संथाली साहित्य का इतिहास. कोलकाता : निर्मल बुक एजेंसी.
19. हसनैन, नदीम. (2001). जनजातीय भारत. नई दिल्ली : जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
20. सन्त्वाना, बेसरा कुमारी. (2021). संथाल जनजाति की जीवनशैली में निरंतरता एवं परिवर्तन. दिल्ली : साद पब्लिकेशन.
21. वैद्य, नरेश कुमार. (2003). जनजातीय विकास मिथक एवं यथार्थ. जयपुर : रावत पब्लिकेशन.
22. रतन, हेम्ब्रम. (2016). संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, रांची : झारखण्ड झरोखा.
23. कुमार, विनय. (2014). संथाली भाषा, लोकगीत एवं नृत्य. रांची : झारखण्ड झरोखा.
24. धनेश्वर, मांझी. (2022). संताली लोक कथा: एक अध्ययन. रांची : झारखण्ड झरोखा.
25. हेम्ब्रोम, अंकिता. (2020). 'संताली लोकसाहित्य' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च. आईएसएसएन: 2455-2232
26. महाजन, संजीव. (2012). भारत में जनजातीय समाज. नई दिल्ली: अर्जन पब्लिशिंग हाऊस.

वेब लिंक-

- <https://www.linkedin.com/pulse/breaking-barriers-challenges-santhali-tribal-children-bhattacharya>
- https://www.researchgate.net/publication/335422317_Educational_Status_of_the_Tribal_West_Bengal_Special_References_to_the_Paschim_Medinipur_District